ISSN 2277-1972
RNI-MPHIN/2008/25439

जनवरी 2022

समय के साखी

प्रगतिशील साहित्यिक पत्रिका

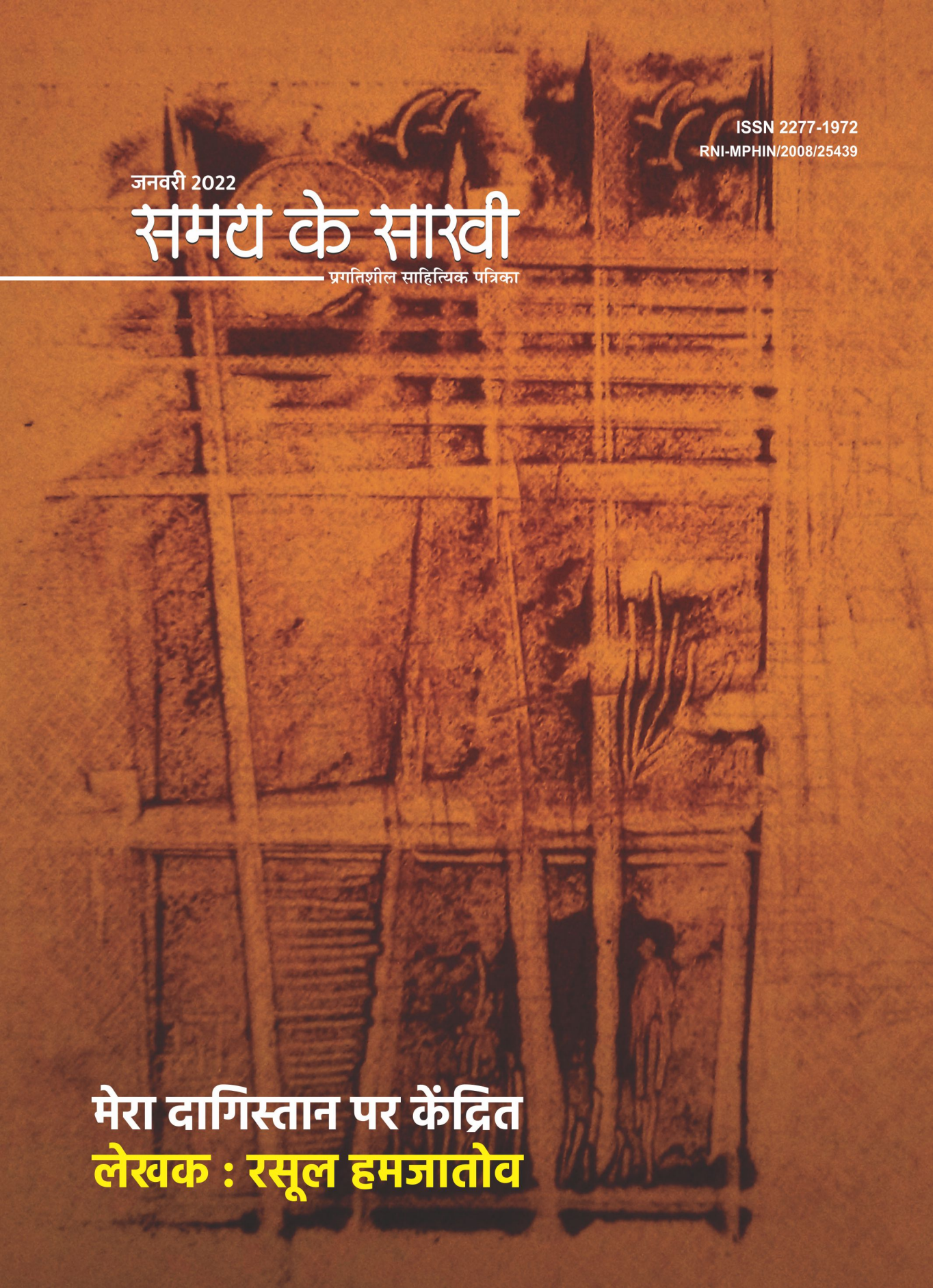

मेरा दागिस्तान पर केंद्रित
लेखक : रसूल हमजातोव

स्वच्छता को हमने 'आदत' बनाया
मध्यप्रदेश का परचम फिर लहराया

आज़ादी का अमृत महोत्सव | मध्यप्रदेश शासन

प्रदेश के सभी सफाई-मित्रों और जागरूक नागरिकों के प्रति आभार

स्वच्छ सर्वेक्षण 2021 अवॉर्ड में मध्यप्रदेश ने हर बार की तरह एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए कई पुरस्कार और सम्मान किये अपने नाम।

21 नेशनल अवॉर्ड | 17 वन स्टार रेटिंग | 70 प्रेरक दौर सम्मान

- इंदौर शहर ने 5 स्टार के साथ सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज के लिये भी पुरस्कार जीता।
- भोपाल को मिला स्व-संवहनीय राजधानी का खिताब और सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज में देश भर में तीसरा स्थान।
- मध्यप्रदेश राज्य को तीसरे सबसे स्वच्छ राज्य का पुरस्कार।
- मध्यप्रदेश के 27 शहरों को मिली स्टार रेटिंग।
- विभिन्न श्रेणियों में प्रदेश के 07 शहरों को राष्ट्रीय पुरस्कार - इंदौर, भोपाल, उज्जैन, देवास, होशंगाबाद, बड़वाह और पचमढ़ी केंट को उत्कृष्ट अवॉर्ड श्रेणी के लिए सम्मान।
  - 1 से 3 लाख जनसंख्या के शहरों में होशंगाबाद शहर को तेजी से बढ़ते शहर और देवास को नवाचार का सम्मान।
  - उज्जैन शहर को 1-10 लाख जनसंख्या के शहरों में नागरिक प्रतिक्रिया में सर्वश्रेष्ठ सम्मान।
  - छोटे शहरों की श्रेणी में खरगौन जिले के बड़वाह को जोनल रैंकिंग में सबसे तेजी से बढ़ते शहर का सम्मान।
- सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज के अंतर्गत इंदौर शहर को 12 करोड़, देवास को 6 करोड़ और भोपाल को 03 करोड़ रुपये का पुरस्कार।
- स्वच्छ सर्वेक्षण में पहली बार प्रेरक दौर का घटक शामिल किया गया। इसमें प्लेटिनम-दिव्य श्रेणी में - 1 शहर, गोल्ड-अनुपम श्रेणी में - 35 शहर, सिल्वर-उज्ज्वल श्रेणी में - 3 शहर, ब्रांज-उदित श्रेणी में - 27 शहर और कॉपर-आरोही श्रेणी में - 4 शहर सहित कुल 70 शहरों को इस घटक में रैंकिंग प्राप्त हुई।

इंदौर को लगातार 5वीं बार मिला भारत के स्वच्छतम् शहर का गौरव

> मुझे गर्व और प्रसन्नता है कि स्वच्छ सर्वेक्षण 2021 में भी मध्यप्रदेश ने माननीय प्रधानमंत्री जी के सपनों और संकल्प को साकार किया है। इस सफलता के लिये मैं सभी मध्यप्रदेशवासियों और विशेष तौर पर सभी स्वच्छताकर्मियों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।
>
> **- शिवराज सिंह चौहान**, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज

- इंदौर, देवास और भोपाल ने राष्ट्रीय स्तर पर बनाया अपना स्थान। (चैलेंज में सीवर लाइनों और सेप्टिक टैंक की सफाई में मानव हस्तक्षेप को खत्म कर मशीनों द्वारा सफाई मित्रों की सुरक्षा को प्रोत्साहित किया जाता है।)

हम हुए पहले से अधिक बेहतर

- 295 शहर ओडीएफ डबल प्लस (ODF++) और 78 शहर ओडीएफ प्लस (ODF+) प्रमाणित। इंदौर को वॉटर प्लस प्रमाणन।

- देश के 10 लाख से अधिक आबादी वाले टॉप 20 शहरों में मध्यप्रदेश के सभी 4 प्रमुख शहर इंदौर, भोपाल, ग्वालियर और जबलपुर हुए शामिल।
- 1 से 10 लाख आबादी की श्रेणी में देश के 100 शहरों में प्रदेश के 25 शहर।

पश्चिमी क्षेत्र श्रेणी

- 50 हजार से 1 लाख आबादी की श्रेणी में देश के 100 शहरों में प्रदेश के 26 शहर शामिल।
- 25 हजार से 50 हजार आबादी की श्रेणी में देश के 100 शहरों में प्रदेश के 26 शहर शामिल।
- 25 हजार से कम आबादी की श्रेणी में देश के 100 शहरों में प्रदेश के 35 शहर शामिल।

स्वच्छ, स्वस्थ, समर्थ - मध्यप्रदेश

D-19399/21

दुनिया में अगर शब्द न होता तो
वह ऐसी न होती जैसी अब है।

परामर्श
राजेश जोशी
रामप्रकाश त्रिपाठी
सेवाराम त्रिपाठी

आवरण एवं रेखांकन
पंकज दीक्षित

आरती
संपादक

समय के साखी

जनवरी 2022

संपादकीय कार्यालय : 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) 462003

मो. : 09713035330, फ़ोन : 0755-4030221

e-mail : samaysakhi@gmail.com

website - www.samaykesakhi.in

आकल्पन : गणेश ग्राफिक्स, भोपाल

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी आरती द्वारा **बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स,** 14-बी, सेक्टर-आई, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल से मुद्रित कराकर 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) से प्रकाशित।

यह अंक 100/- (डाक खर्च 30/- अतिरिक्त)

समस्त भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट 'समय के साखी' के नाम स्वीकार्य होंगे। खाता क्रं. 451702011003868, IFSC Code UBI-NO545171५४५१७१ 'समय के साखी' नामे, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा-अरेरा कॉलोनी, भोपाल में भी जमा कर सकते हैं।

नोट : किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.) होगा।

सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक/प्रकाशक

अच्छी साज-सज्जा बुरी किताब को नहीं बचा सकती। उसका सही मूल्यांकन करने के लिए उस पर से पर्दा हटाना जरुरी है।

क्रम

मेरे शब्द : मेरा दागिस्तान : किताबों के महासागर की ओर खुलने वाली एक छोटी लेकिन... **4**

मेरा दागिस्तान पर कुछ टिप्पणियां / 8-28

यह मत कहो कि मुझे विषय दो, कहो कि मुझे आँखें दो ! : राजेश जोशी 8

मेरा दागिस्तान : कवि-शिक्षा की किताब : बसंत त्रिपाठी 11

मेरा दाग़िस्तान : भाषा के तानेबाने पर बुनी हुई एक संस्कृति का आख्यान : अनुराधा सिंह 14

राष्ट्रभक्ति के खिलाफ देशप्रेम का आख्यान : राकेश मिश्र 18

मातृभाषा, विमर्श और साहित्य : यादवेंद्र पाण्डे 23

साहस यह नहीं पूछता कि चट्टान कितनी ऊंची है : मनोज कुलकर्णी 27

मेरा दागिस्तान : खंड - 1 - रसूल हमजातोव / 29-224

मेरे शब्द ...

मेरा दागिस्तान : किताबों के महासागर की ओर खुलने वाली एक छोटी लेकिन बेहद जरूरी खिड़की

'विषय' पर बात करते हुए रसूल हमजातोव कहते हैं कि- ' कलकत्ते में रविंद्रनाथ टैगोर के घर में मैंने एक पक्षी का चित्र देखा। ऐसा पक्षी पृथ्वी पर कहीं नहीं है। और न कभी था। टैगोर की आत्मा में उसका जन्म हुआ और वह वही रहा। उनकी कल्पना का परिमाण था मगर जाहिर है अगर टैगोर ने हमारी दुनिया के असली परिंदे न देखे होते, तो वे अपने इस अद्भुत पक्षी की कल्पना भी न कर पाते।'

रसूल हमजातोव का ऐसा ही अनूठा पक्षी है 'मेरा दागिस्तान'। रसूल ने जिसकी कल्पना की। इसके पहले ऐसी किताब पूरी दुनिया के साहित्य में नहीं थी। इस किताब के भीतर- किताब कैसी होनी चाहिए? नाम रखने की प्रक्रिया से लेकर भूमिका की जरूरत है या नहीं? एक अच्छी किताब क्या होती है? क्या होना चाहिए और क्यों? जैसे तमाम विषयों पर बात करते हुए अपनी आसपास की दुनिया से लेकर तमाम विश्व पर एक समानांतर नजर दौड़ाई गई है। किताब से जुड़े छोटे-छोटे बिंदु, विषय, विधा, भाषा, भूमिका, किताब को लेकर उठने वाले मन में संशय, संपादक, प्रकाशक, अनुवादक तमाम हिस्सों को लेकर के रसूल ने इस किताब के भीतर बात की है। रविन्द्रनाथ टैगोर के कल्पनालोक के पक्षी की तरह ही रसूल हमजातोव की यह किताब एक अद्भुत, अकल्पनीय किताब है और रसूल के ही शब्दों में कहें तो 'यह किताब वे इसलिए लिख पाए क्योंकि उन्होंने अपने दागिस्तान को उसकी बारीकियों के साथ देखा था।' दागिस्तान के साथ साथ रसूल ने पूरी दुनिया को देखा । उन्होंने कई जगह लिखा भी है कि - 'दुनिया भर के अलग-अलग देशों से, वहाँ की खूबियों को देखते हुये मुझे हर बार अपना दागिस्तान याद आया। अपना जन्मगाँव याद आया। अपने लोग, अपने गीत, अपने पहाड़ याद आए।'

एक बैठक में खत्म करने के इरादे से इस किताब को न पढ़ें। इसके सफों पर दी हुई नसीहतों को सुनें, लेखक के साथ-साथ गाँव की चक्करदार गलियों में फेरा लगायें, किस्सों को समझें, गीतों को दिल से महसूस करें। बस इस किताब से बार-बार मिलते रहें।

यही कहना चाह रहे थे रसूल शायद इसीलिए मेरा दागिस्तान की शुरुआत कुछ ऐसे होती है-
'जब आँख खुलती है, तो बिस्तर से
ऐसे लपककर मत उठो
मानो तुम्हें किसी ने डंक मार दिया हो,

तुमने जो कुछ सपने में देखा है
पहले उस पर विचार कर लो।'

कुनकुने दूध से भरा गिलास है 'मेरा दागिस्तान' जिसे धीरे-धीरे घूँट घूँट पीना होगा, तभी इसका स्वाद आएगा। इसके भीतर कभी न चुकने वाला खजाना भरा पड़ा है। कविता है, कहानी है, लोकोक्ति और मुहावरे हैं। संस्मरणों की लंबी डोर है जो भीतर ही भीतर एक दूसरे से जुड़ी है। कभी-कभी आलोचनात्मक वातावरण भी रसूल बनाते हैं। कई बार तो यह उपन्यास और आत्मकथा सा लगने लगता है। यह किताब दोस्तों के साथ अड्डेबाजी का सुख देती है। दादी- नानी की रातभर चलने वाली कहानियों का मजा देती है। माता पिता की नसीहत है और अध्यापक का सिखाया अनुशासन इस किताब में निहित है। यह सच्चे प्रेम की तरह जीवन भर याद रहने वाली इबारत की तरह है। इस पुस्तक का कोई भी पृष्ठ, उस पृष्ठ का कोई भी पैरा, किसी भी वाकये पर ऊँगलियाँ रखें, बहुमूल्य अशर्ि्फयाँ हाथ लगती हैं।

इस किताब को पढ़कर जाहिर है कि लेखकीय दुनिया में मान्यता प्राप्त एक लेखक को भी किसी नई रचना से पहले कितनी मुश्किल विचार प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, 'मेरा दागिस्तान' उसी कशमकश का प्रमाण है। किसी किताब को लिखने से पहले उसकी पूरी बारीकियों पर किस तरह से पैनी नजर रखी जानी चाहिए, वे बारीकियाँ इस किताब को पढ़ने के बाद समझ में आती है और यह भी कि एक रचना, एक कविता, एक किताब कितनी बड़ी जिम्मेदारी है। बेशक एक शब्द कितनी बड़ी जिम्मेदारी है तभी तो रसूल कहते हैं- 'दुनिया में अगर शब्द न होता तो वह वैसी न होती, जैसी है।' और यह भी कि- 'दीवारें अगर मजबूत नहीं है तो सुंदर मकान भी गिर सकता है।' आशय कि सुंदर शब्द और केवल भाषा से ही कोई किताब महत्वपूर्ण नहीं हो जाती।

अपने समय और पूर्व समय से हटकर की गई कल्पना और निराले ढंग से यह किताब लिखी गई है। जैसे- नोटबुक से पिताजी कहा करते थे... अबूतालिब ने कहा ऐसा कहते हैं...- यह कुछ नये प्रयोग हैं जिनसे किताब आगे बनती है और रोचकता बनाये रखती है।
बेतरतीब ढंग से चीजों को कहकर उसे और भी रोचक बनाने का फॉर्मूला जो किस्सों के पास होता है, वही 'मेरा दागिस्तान' के पास है। ऐसा लगता है जैसे चौपाल में कोई लंबा किस्सा चल रहा है और उसमें कई लोग भागीदारी कर रहे हैं। सब अपने-अपने किस्से लेकर खड़े होते हैं, सुनाते हैं और बैठ जाते हैं।

रसूल ने ऐसे विषयों पर भी बात की है जिनसे एक संभ्रांत दूरी उस समय के लेखक भी बना रहे थे। एक बड़ा दिलचस्प उदाहरण इस किताब में है कि दागिस्तानी लेखक संघ के दरवाजे में एक समय पर लिखा हुआ था कि- 'गहरी सैद्धांतिक तैयारी के बिना तुम्हें इस दरवाजे को लाँघने का अधिकार नहीं है'। अबूतालिब दागिस्तान के जनकवि, सोवियत संघ के सम्मानित सदस्य इस कोटेशननुमा चेतावनी को पढ़कर वापस आ जाते हैं। रूढ़ियाँ, कट्टताएँ चाहे जैसी भी हों, बहुत ही अच्छे विचार के भीतर भी अपनी जगह बना लेती हैं। इसलिए शायद रसूल ने विचारों के ऊपर भी पूरी किताब में काफी बात की है। किसी रचना की बुनियाद में विचार जरूरी तत्व है लेकिन वह कैसे आना चाहिए? विचार झंडे की तरह नहीं, नारे की तरह नहीं हो, इस बात को रसूल ने कई उदाहरण देकर कहने की कोशिश की है और इस तरह पोलिटिकल कलेक्टनेस के बीच अपना पक्ष भी रखा है।